प्लूटो

अंक 1 वर्ष 1

अप्रैल - मई, 2016

सैंकड़ों बार गिने थे मैंने
जेब में नौ ही कंचे थे

एक जेब से दूसरी जेब में रखते-रखते
एक कंचा खो बैठा हूँ!
न हारा न गिरा कहीं पर
"प्लूटो" मेरे आसमान से गायब है!

गुलज़ार

मूल्य ₹50

गिलहरी

प्रयाग शुक्ल

उतरी उतरी पेड़ से गिलहरी
सरपट वह भागी
जहाँ जमे हैं सूखे पत्ते बहुत से
उनके पास ठहरी
फिर भागी गिलहरी
सर सर सर पत्तों के ऊपर से
गई कूद कूद
मिला उसे एक अमरूद
दौड़ गई दौड़ गई गिलहरी
छिप गई वहाँ फूलों के पास
हिलने लगी उसके चलने से
हरी हरी घास

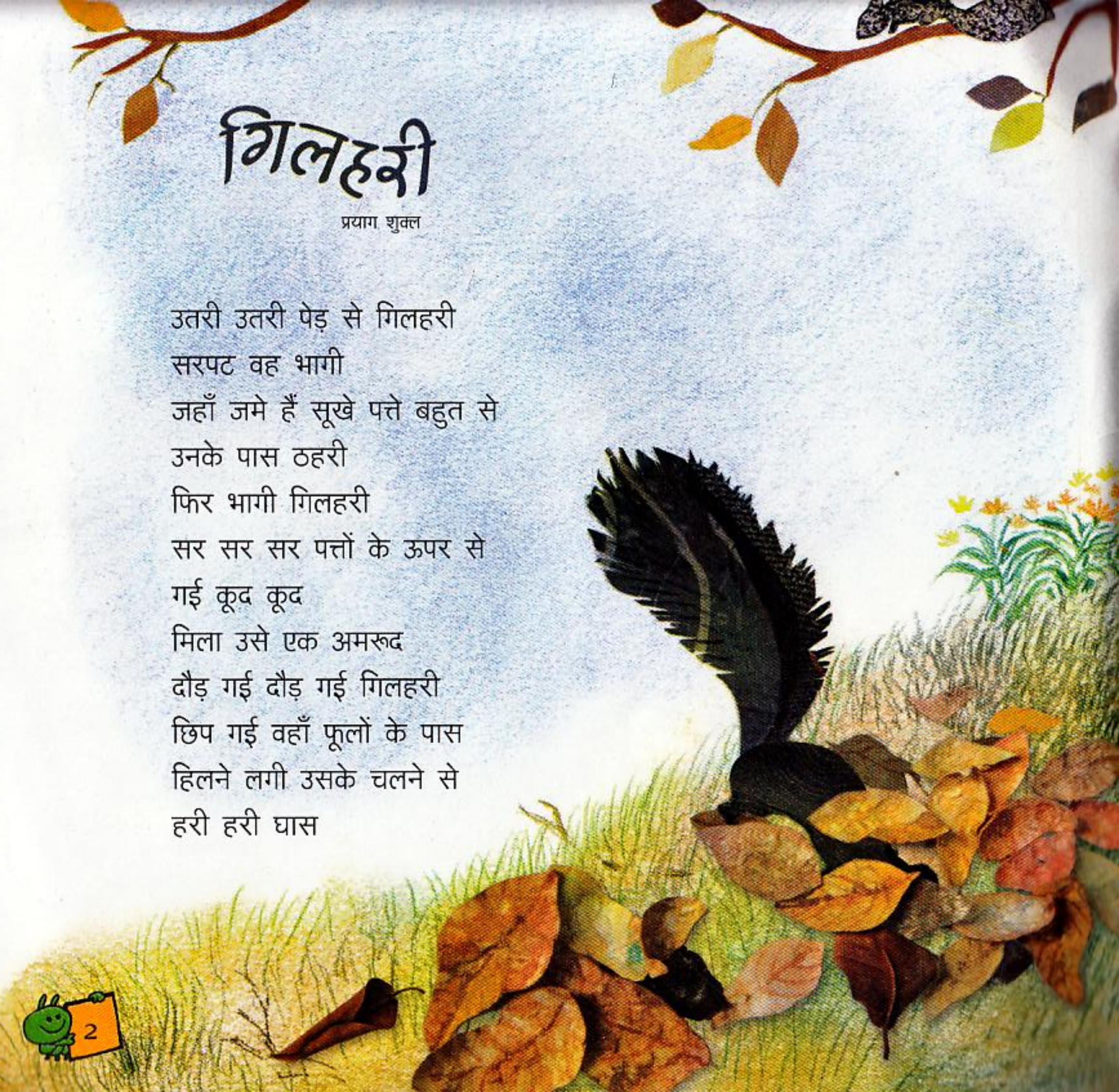

एक थी मुर्गी

सूफी तबस्सुम

एक थी मुर्गी
एक बटेर
लड़ने में थे
दोनों शेर

लड़ते लड़ते
हो गई गुम
एक की चोंच
और एक की दुम

चींटी चलती है चीनी लेकर चींटी चलती है

देखके चीनी का दाना खिल जाती है चींटी तो फिर चींटी और चींटी मिल जाती है

चलती है

सुशील शुक्ल

चलती है... चींटी रुकती है तो चीनी रुकती है

चींटी चलती है तो चीनी चलती है

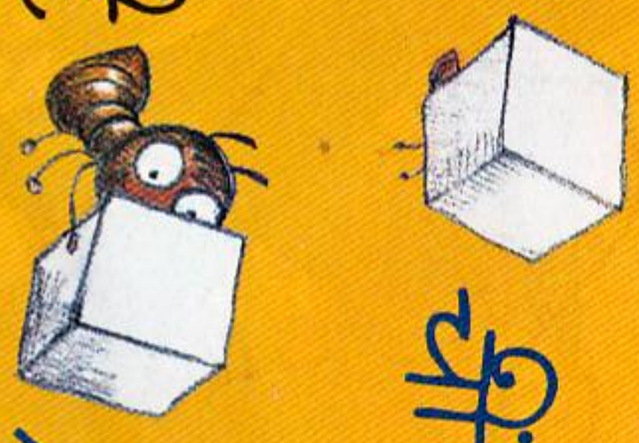

रस्ते में एक

होती है चीनी की दावत मीठी होती है

फिर? चींटी चलती है चीनी खाकर...

मेरी बच्ची मेरी माँ

मेरे घर में दो लोग रहते हैं। मेरी माँ और बोलो कौन! और मैं! हम दो लोग रहते हैं। हम सब काम मिलकर करते हैं। हम में से किसी को कोई काम पूरा-पूरा नहीं आता। माँ कनस्तर से आटा निकाल लेती है। फिर पूछती है कि मैं कुछ भूल तो नहीं रही हूँ। तो मैं ही याद दिलाती हूँ कि नमक तो डाला ही नहीं।

माँ आटा गूँथती है तो मैं पानी डालती हूँ। कभी-कभी मुझसे ज़्यादा पानी गिर जाता है। फिर आटा गीला हो जाता है। फिर मैं ही कनस्तर खोलती हूँ। उसमें से एक कटोरी आटा निकालती हूँ। और धीरे-धीरे गीले आटे में सूखा आटा डालती जाती हूँ। सूखा आटा सफेद होता है। पर गीला होते ही उसका रंग बदल जाता है।

कभी-कभी आटा गूँथते-गूँथते माँ के चेहरे पर आटा लग जाता है। मैं अपनी हथेली से उसे साफ कर देती हूँ। आटा साफ हो जाता है। पर माँ फिर भी पूछती है - ठीक से पौंछ दिया न। मैं कहती हूँ - हाँ पौंछ दिया। मैं उन्हें हथेली दिखाती हूँ।

पर हथेली पर तो आटा नज़र नहीं आता। माँ कहती है - देखो वहीं लगा होगा। पर आटा तो वहाँ नहीं होता है। मैं दुबारा हथेली से माँ के

चित्रः शशि शेट्ये

गाल पौंछ देती हूँ। आटा गूँथने के बाद मैं ही माँ के हाथ धुलाती हूँ।

माँ बड़ी हो गई है पर उसे कई चीज़ें नहीं आती हैं। इसलिए मैं हमेशा उसके साथ रहती हूँ। वह भी हमेशा मेरे साथ रहती है।

केरल के केले

प्रयाग शुक्ल

केरल के केले
केरल का पानी
केरल की नावें
लम्बी पुरानी

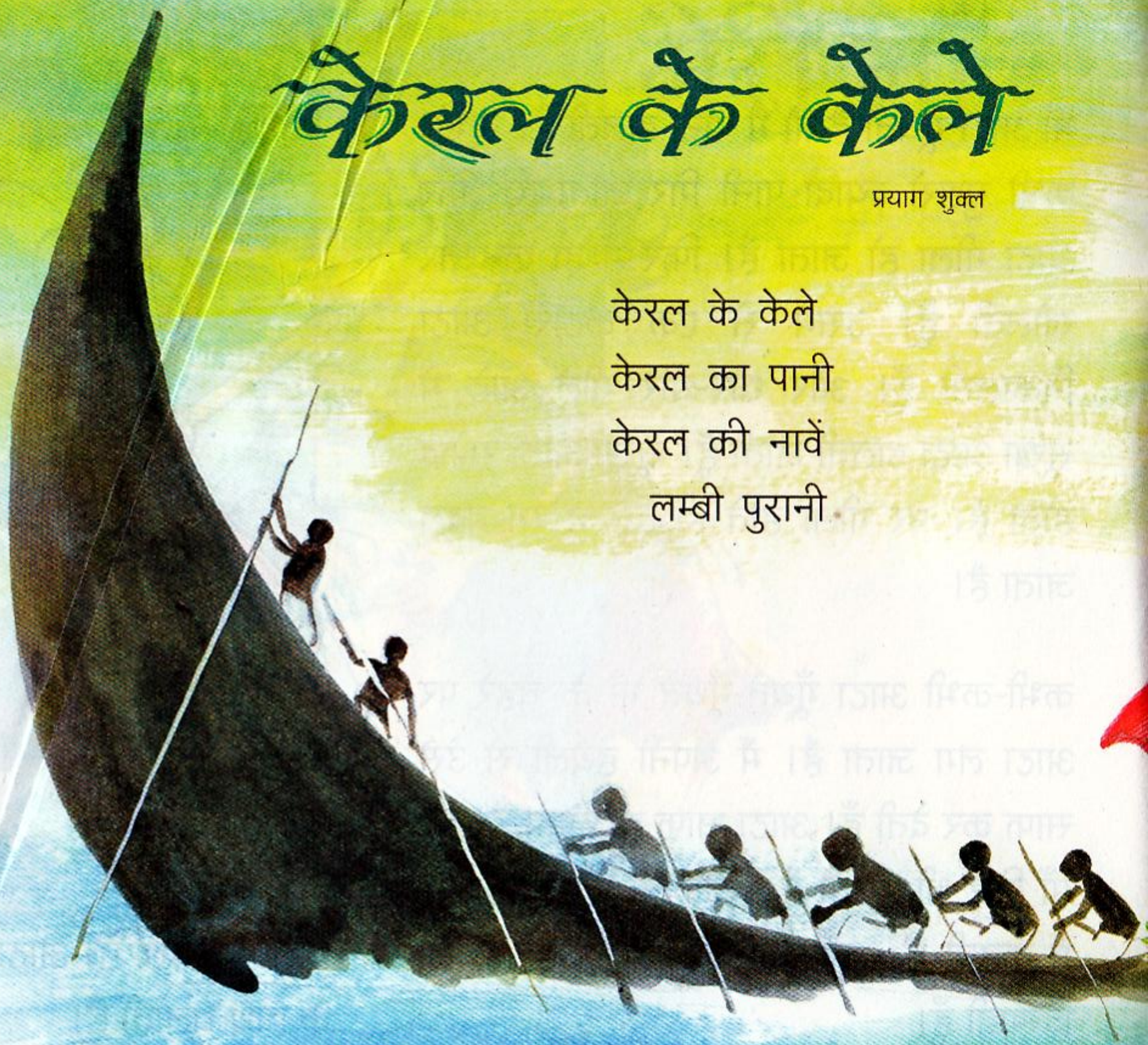

केरल के हाथी
केरल के चावल
केरल की नदियाँ
केरल के बादल
है इनकी लम्बी
लम्बी कहानी

केरल के केले
केरल का पानी

चित्रः जगदीश जोशी

कुतुब मीनार का पेड़

प्रभात

किसी तरह एक कौए को किसी तरह की साइकिल मिली। किसी तरह की साइकिल पर बैठकर कौआ किसी तरह दिल्ली पहुँचा। दिल्ली में किसी तरह उसे कुतुबमीनार दिखी। किसी तरह वह कुतुबमीनार तक पहुँचा।

कुतुबमीनार को देखकर कौआ सोचने लगा, इतनी सुन्दर मीनार लेकिन बिना पंख? उसे कुतुबमीनार में यह किसी तरह की कमी नज़र आई। फिर उसे लगा, यह यहाँ क्यों है? यहाँ इतने खतरे हैं। बाढ़ आई तो बह सकती है।

तेज़ गर्मी में झुलसकर सूख सकती है। फिर यह जगह अण्डे देने के लिए भी सुरक्षित नहीं है।

कुतुबमीनार यहाँ अपने अण्डे कैसे देगी? इसे यहाँ नहीं होना चाहिए। ऐसा कहते हुए कौए ने कुतुबमीनार को साइकिल पर रखा और ले चला। वह किसी तरह से उसे सुन्दर जंगल के भीतर लाया।

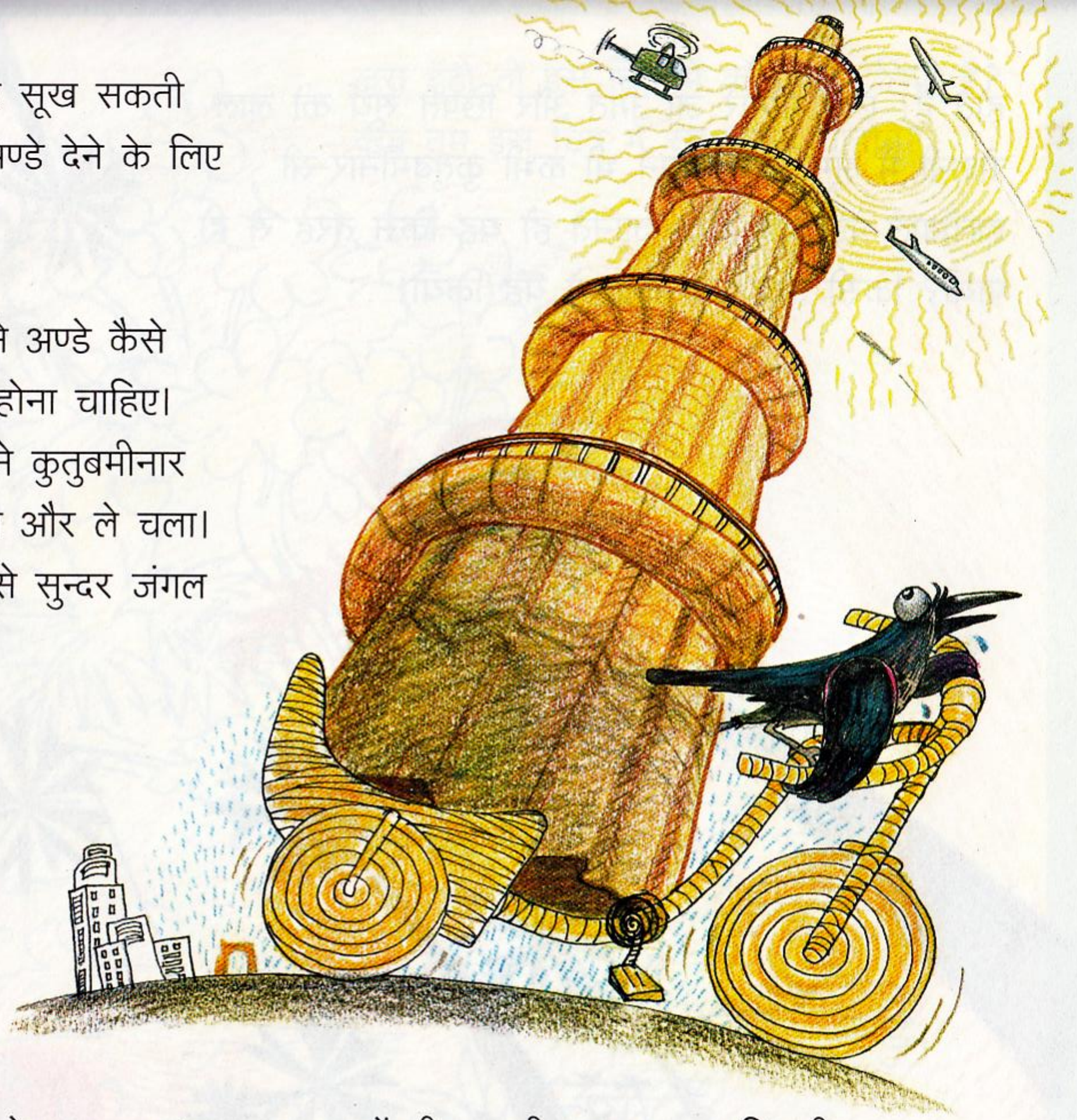

उसने कुतुबमीनार को पेड़ पर रखा। पेड़ पर कुतुबमीनार सबसे सुन्दर डाल से भी सुन्दर लग रही थी। ऐसा कहते हैं तभी से पेड़ों की कुछ डालें मीनार की तरह सुन्दर दिखती हैं। ऐसी मीनारें जिनमें पत्ते और फूल होते हैं। ऐसी मीनारें जो उगते और छिपते सूर्य की लाल रोशनी में झूमती

होते हैं। ऐसी मीनारें जो उगते और छिपते सूर्य की लाल रोशनी में झूमती हैं। तुमने भी कभी कुतुबमीनार-सी डालोंवाले पेड़ देखे होंगे। जानते हो यह किस तरह से हो पाया? किसी तरह एक कौए ने यह किया।

चित्रः तापोशी घोषाल

ज़रा ढूँढो तो इस चित्र में कौन-कौन छिपा है?
क्या तुम इस चित्र में रंग भरना चाहोगे?

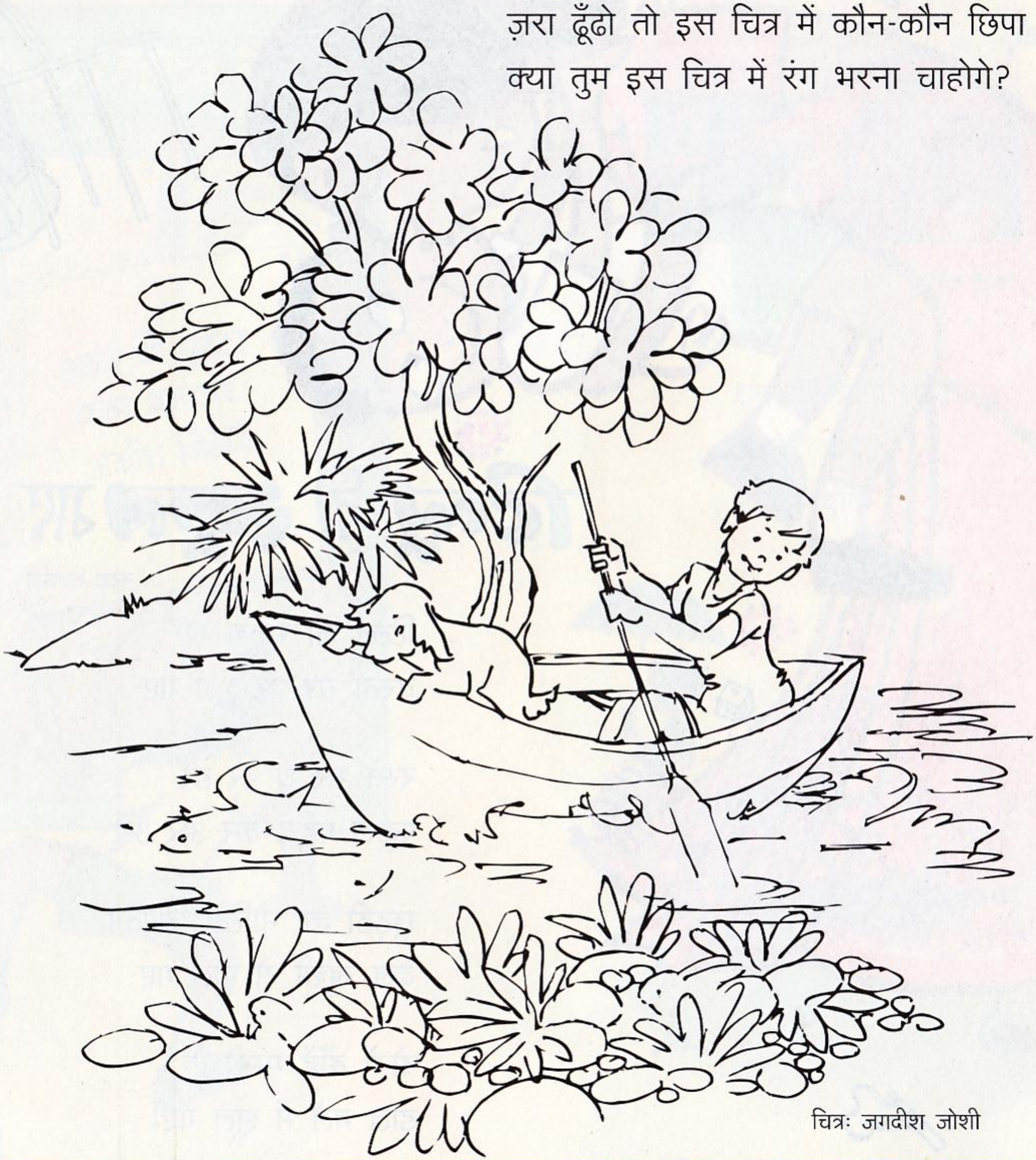

चित्रः जगदीश जोशी

टिल्लू जी स्कूल गए

नरेश सक्सेना

टिल्लू जी स्कूल गए
बस्ता घर पर भूल गए

रस्ते भर थे डरे डरे
स्कूल पहुँच कर अरे अरे

छुट्टी का नोटिस चिपका
देख खुशी से फूल गए

दोनों बाँहें मम्मी के
डाल गले में झूल गए।

सुशील शुक्ल

धूप से बोली छाँव
न तेरे पाँव
न मेरे पाँव

तुमने हाथी देखा है?

एक बार हमारे मोहल्ले में फेरीवाले आए थे। उनके साथ एक हाथी भी था। मैंने उसे एक केला खिलाया। मैंने सोचा कि केले का छिलका उतारकर हाथी को खिलाऊँगा। पर हाथी को शायद तेज़ भूख लगी होगी। उसने झट से अपनी सूँड बढ़ाकर केला मुझसे ले लिया।

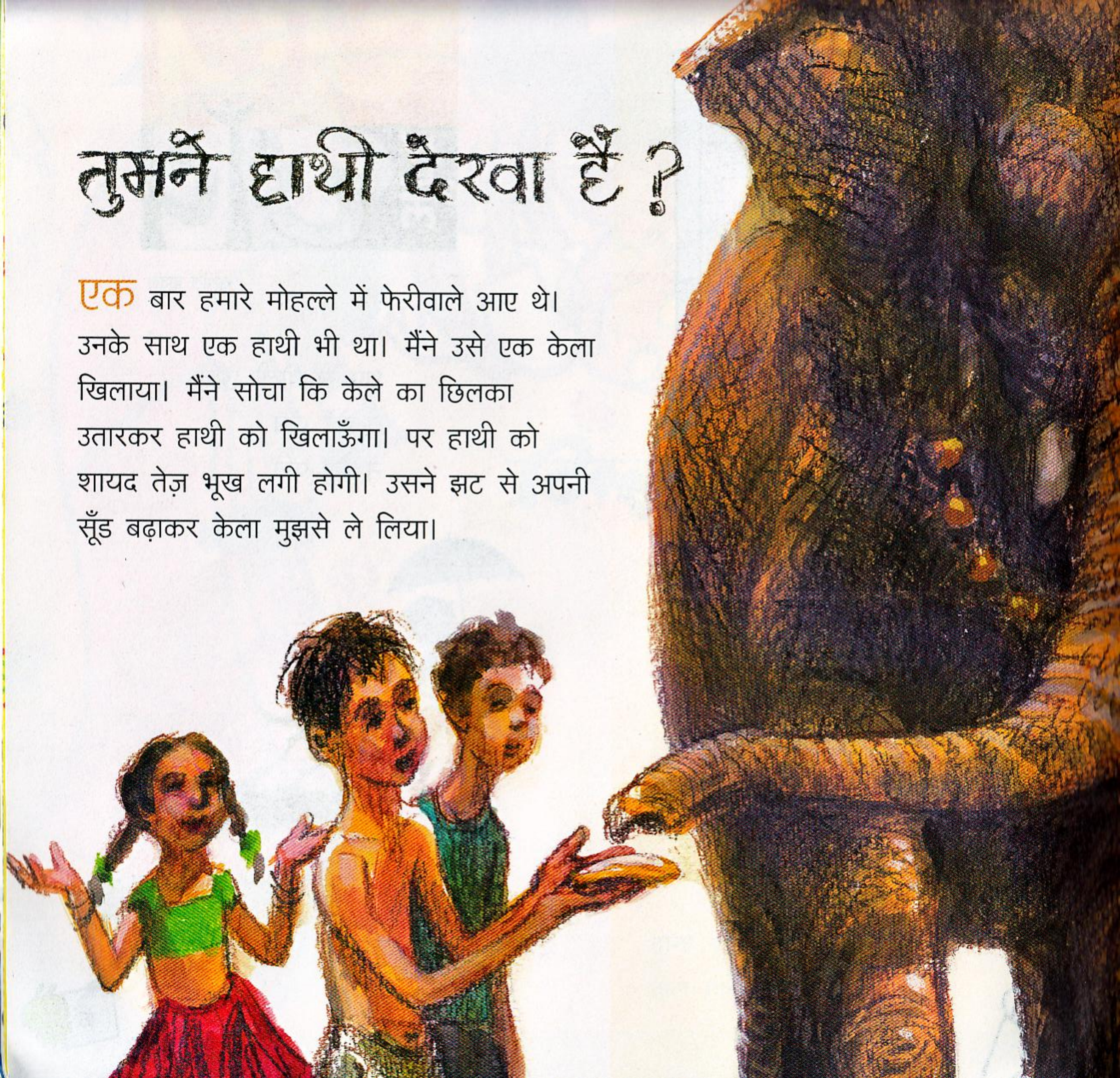

चित्रः शुद्धसत्त्व बसु

फेरीवाला मुझसे बोला, चलो तुम्हें हाथी पर बिठा देते हैं। मैंने कहा, नहीं। मैं हाथी को पहले ठीक से देख तो लूँ। ऊपर बैठकर तो हाथी ठीक से दिखेगा ही नहीं। हाथी भी तो मुझे देखना चाहता होगा। अगर मैं ऊपर बैठ जाऊँगा तो वो मुझे कैसे देख पाएगा? उस दिन हाथी हमारे पूरे गाँव में घूमा। मैं और मेरे सारे दोस्त उसके साथ घूमते रहे। कभी हम सब उसके आगे चलने लगते। कभी हम उसके पीछे-पीछे चलने लगते।

फिर हाथी चला गया। फेरीवालों के साथ। वह बहुत देर तक हमें जाता नज़र आता रहा। हम बहुत देर तक उसे जाता देखते रहे।

इस बात को बहुत दिन हो गए हैं। पता नहीं अब हाथी कब आएगा? हिना कहती है हाथी को सब याद रहता है। कई-कई सालों तक। हाथी होता भी तो कितना बड़ा है। तो उसकी याद भी बड़ी रहती होगी। पर उसकी आँखें तो छोटी होती हैं। हाँ, पर उसने मेरे हाथ का केला तो झट-से देख लिया था। क्या उसे मैं भी याद होऊँगा? और मेरे दोस्त? तो वह हमसे मिलने क्यों नहीं आ जाता?

गिलहरी के बच्चे तीन

गिलहरी के बच्चे तीन
चीन से आए हैं कोचीन
वहाँ से वो जाएँगे रांची
रांची से लाहौर करांची।

पेज़ 13 के उत्तरः बन्दर, चिड़िया, उड़ती हुई चिड़िया, मछली, कछुआ, खरगोश

कैसा कैसा खाना

प्रभात

राशि खाना खाते हुए।

राशि, बेटे जल्दी से
खाना खा लो।

फिर तुम्हें
डॉक्टर को दिखाने ले चलेंगे।

दवाख़ाना

डॉ.राजीव वर्मा

डॉक्टर साब,
ये खाँसी तो इसे खा ही जाएगी।

ये गोली दिन में दो बार
और ये वाली तीन बार खानी है।

तोपखाना

राशि मम्मी के साथ लौटते हुए।

कबाड़खाना

जेलखाना

रामपुर स्टेशन

मुसाफिरखाना

पंजाबी खाना

तंदूरी ढाबा

चिकन करी
फिश करी
मटन करी
दाल मखानी
तड़का दाल
राजमा चावल
कढ़ी चावल

राजस्थानी खाना

दाल

बाटी

चूरमा

स्वागत है

इस्पात का कारख़ाना

मम्मी कारख़ाने में
क्या लोग कारों को खाते हैं?

साउथ इंडियन रवाना

सांभर बड़ा

इडली

दोसा

थाली

आपका कुत्ता
क्या खाता है?

जी, ये काट
खाता है!

राशि मम्मी के साथ जाते हुए। रास्ते में झील का दृश्य।

मम्मी इतने सारे लोग यहाँ क्यों आए हैं?

आए हैं घूमने-फिरने, हवा खाने।

घर का दृश्य।

राशि चुपचाप
दवा खाओ
और सो जाओ।

मम्मी लोग
हवा कैसे खाते होंगे?

अब अगर तुमने सिर खाया
तो डाँट खाओगी। समझीं?

भैंस

भैंस अकल से बहुत लड़ी
अकल बड़ी कि भैंस बड़ी

एक नहीं दो तीन बजाए
भैंस के आगे बीन बजाए

अकल की आनाकानी में
भैंस निकल ली पानी में

देख के भैंसों की एक टोली
नाक पकड़ के मछली बोली
पानी में पॉटी मत करना।

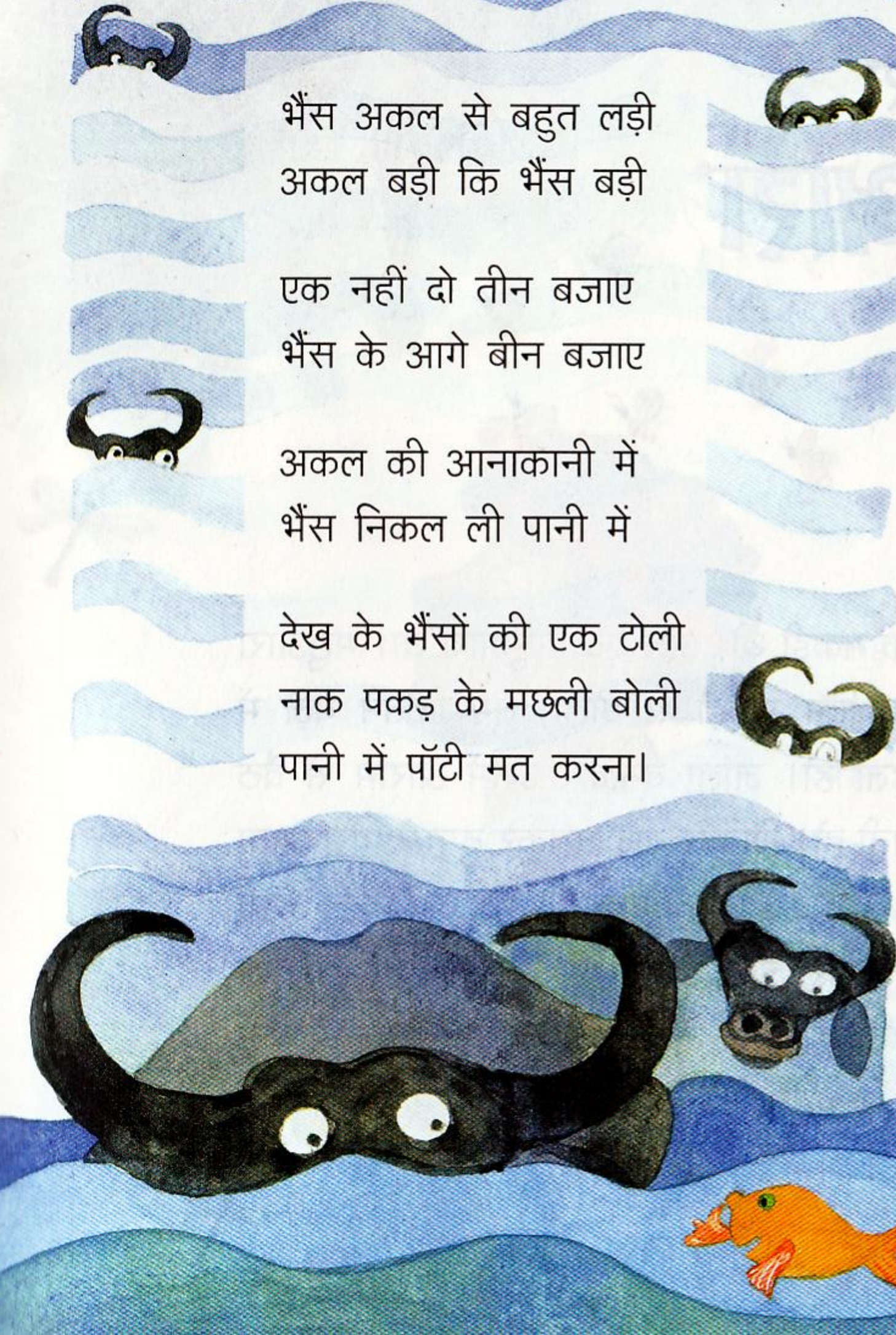

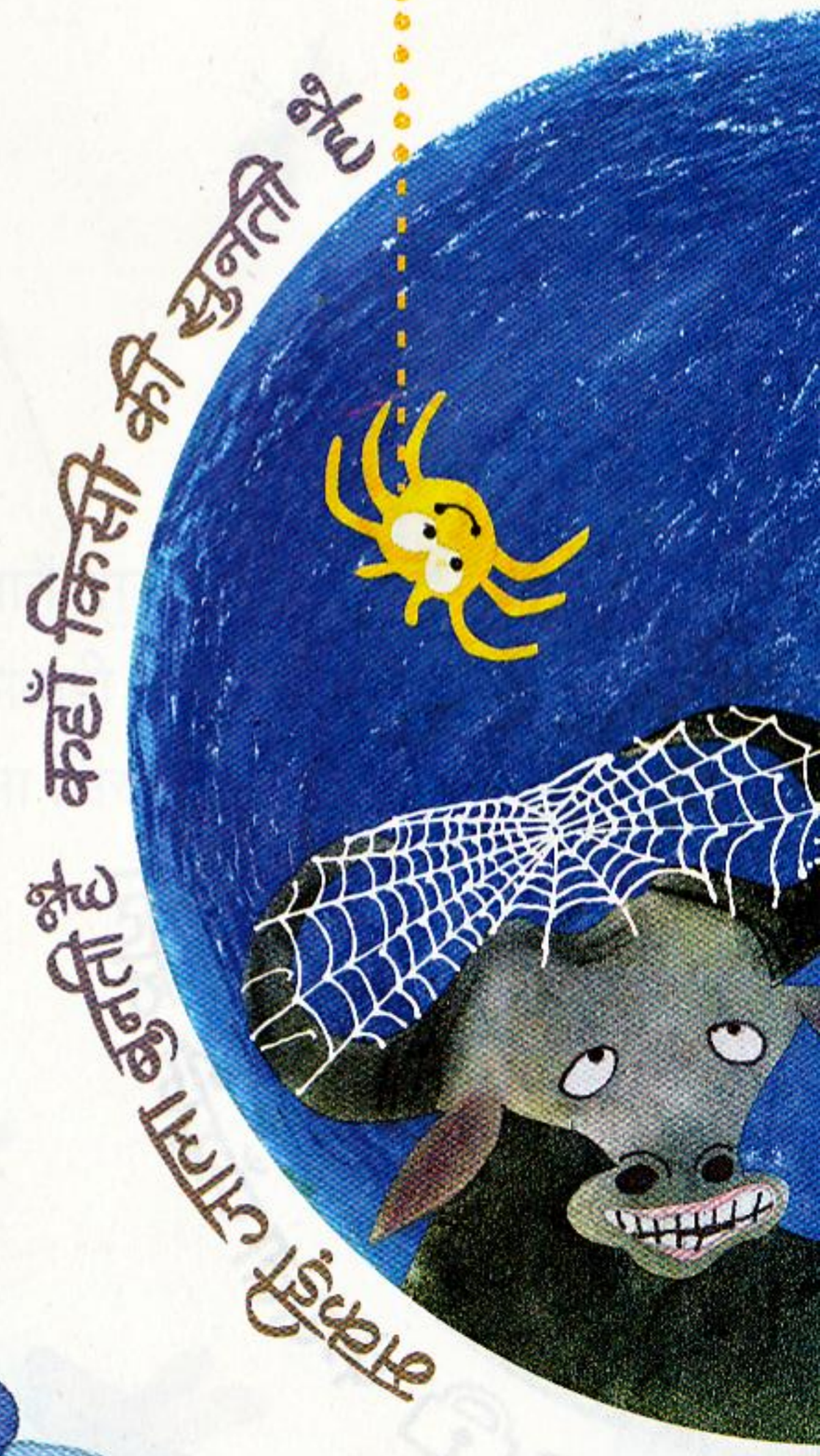

मकड़ी और मछुआरा

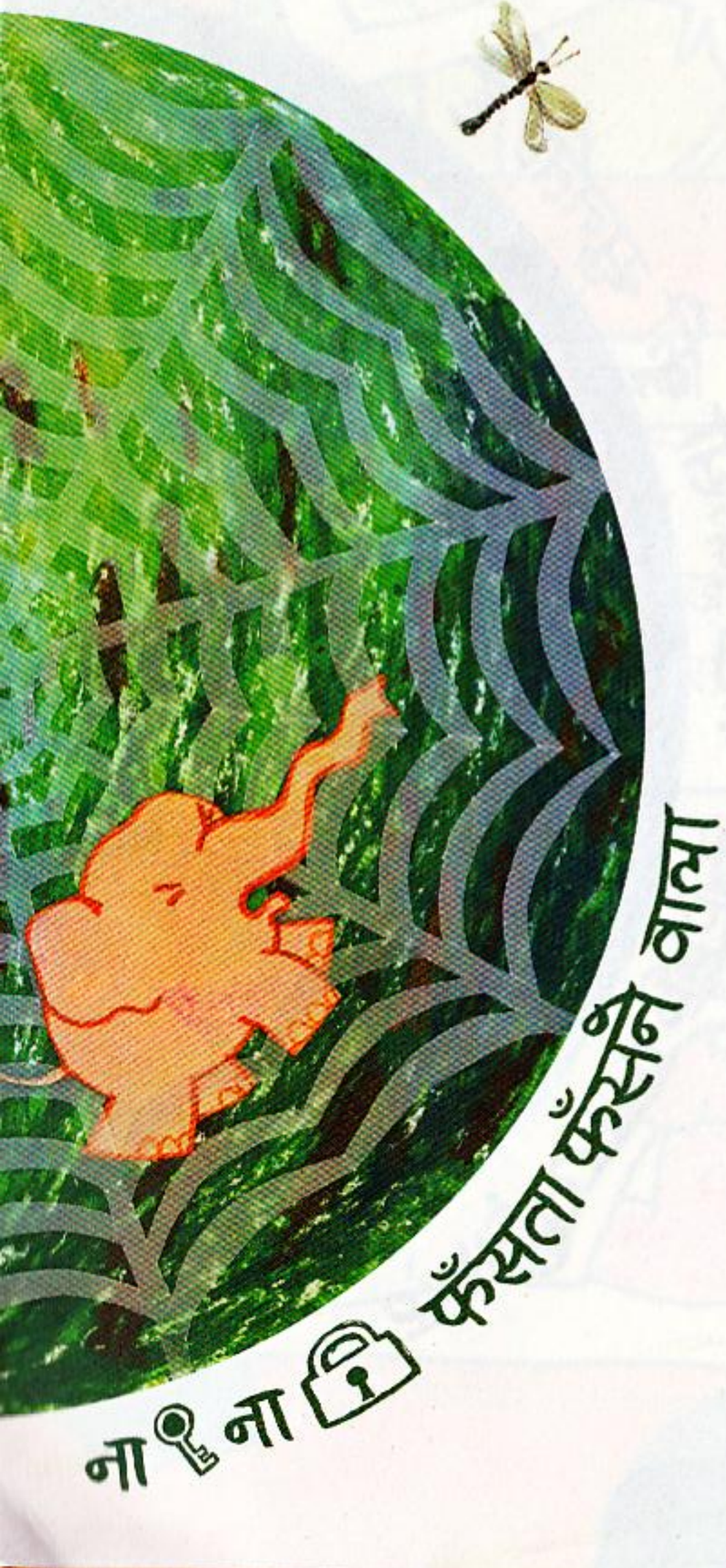

एक मकड़ी थी। और एक मछुआरा था। मछुआरा एक दिन मकड़ी से बोला, तुम कितने मज़े में रहती हो। जाला बनाकर उसमें आराम से बैठ जाती हो। शिकार खुद चलकर तुम्हारे पास आता है। मुझे देखो, नदी बहुत दूर है। वहाँ पैदल जाता हूँ। फिर जाल डालता हूँ। बैठा रहता हूँ, बैठा रहता हूँ। फिर जाकर कहीं एक मछली फँसती है। कभी तो पूरे दिन में तीन-चार मछलियाँ फँस पाती हैं।

मकड़ी उसकी बातें सुन रही थी। मछुआरा फिर हँसकर बोला, मकड़ी दोस्त, क्या तुम मुझे अपने जैसा जाल बनाना सिखा सकती हो?

मुर्गी माँ

निरंकार देव सेवक

मुर्गी माँ घर से निकली
बस्ता ले बाज़ार चली
बच्चे बोले चें चें चें
अम्मा हम भी साथ चलें

चित्रः शोभा घारे

प्लूटो

अतिथि सम्पादकः सुशील शुक्ल
डिज़ाइनः तापोशी घोषाल
सभी चित्रः तापोशी घोषाल

आवरण चित्रः तापोशी घोषाल

मुद्रक तथा प्रकाशक संजीव कुमार द्वारा
तक्षशिला पब्लिकेशन–तक्षशिला एजुकेशनल सोसाइटी की इकाई के लिए
मल्टी कलर प्रेस, शेड नं. 92 डी.एस.आई.डी.सी., ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज़ 1, नई दिल्ली 110020 से मुद्रित एवं सी-404, बेसमेंट, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली 110024 से प्रकाशित, **सम्पादकः रीमा सिंह**

प्लूटो का पताः
नॉलेज सेण्टर
सी-404, बेसमेण्ट, डिफेंस कॉलोनी,
नई दिल्ली 110024
फोनः 011- 41555 418/428
ई-मेलः pluto@takshila.net

केले

अनवारे इस्लाम

गली गली में ठेले
केले ले लो केले

पैसे हैं न धेले
कैसे ले लूँ केले

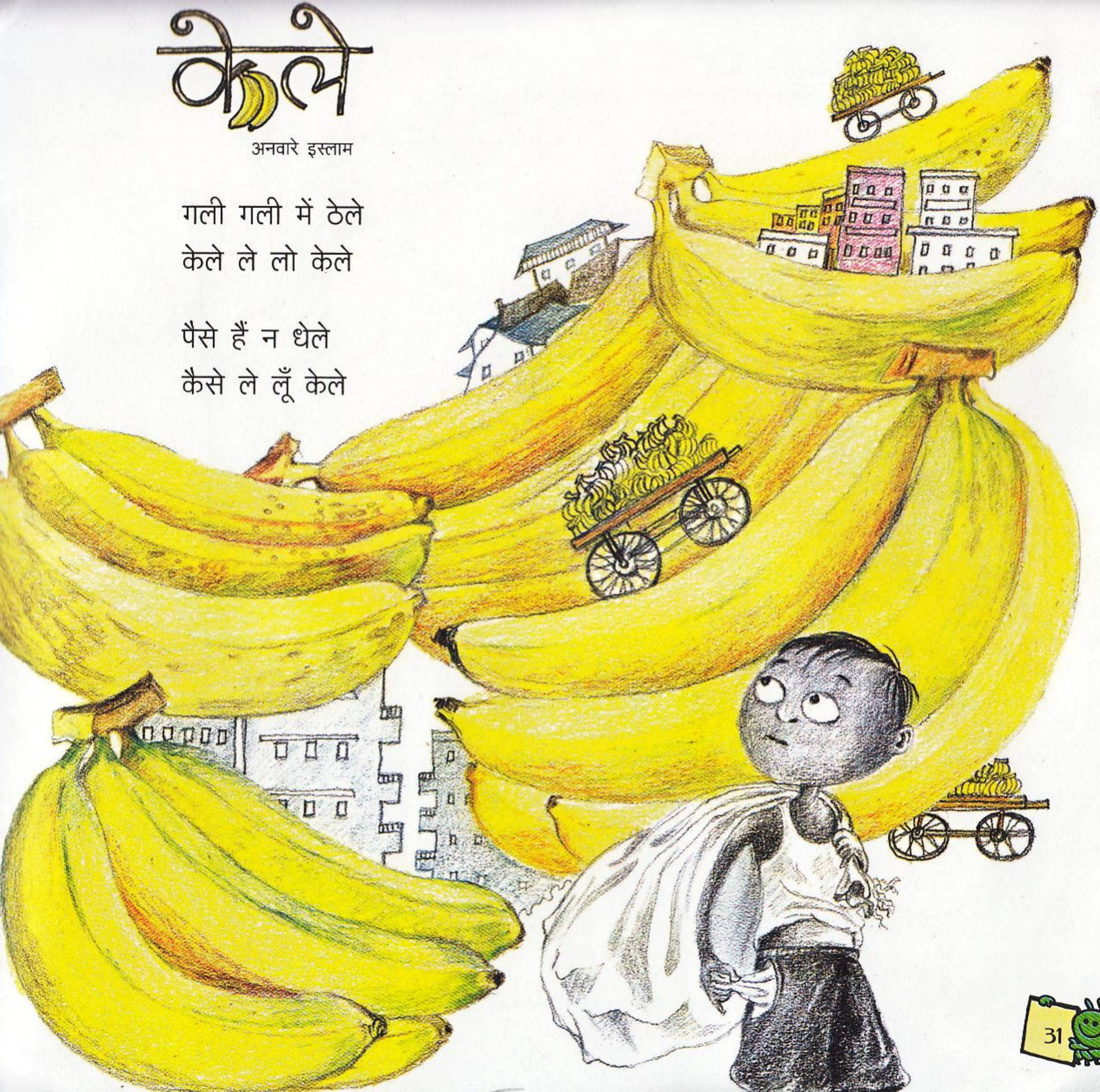

समय

गुलज़ार

छोटा-सा प्लेनेट समझा था, पैदा हुआ है
मेरे सोलर सिस्टम में
मेरा नवासा- मेरा समय!

दो ही साल का है और यूँ महसूस होता है
सूरज है वो और हम सब
उसके प्लेनेट हैं
उसके गिर्द ही घूमा करते हैं
मोह में कैसी ग्रेविटी जैसी ताकत होती है!